षोडश संस्कारों में समाहित भारतीय ज्ञान-विज्ञान परम्परा

प्रस्तुतकर्त्री
डॉ.पूजा मनमोहनोपाध्याया
सहायिकाचार्या
विशिष्टसंस्कृत विभाग
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय
उज्जैन ,मध्यप्रदेश

उद्देश्य -

१. षोडश संस्कारों का परिचय प्रदान करना |
२. आधुनिक काल में भी उक्त संस्कारों की प्रासंगिकता प्रतिपादित करना |
३. संस्कारों में निहित विज्ञान को प्रतिपादित करना |
४. वर्त्तमान जीवन शैली में इनका परिवर्तित स्वरूप स्पष्ट करना |
५. प्राचीन भारतीय आचारशास्त्र में आस्था अभिव्यक्त करना

Vaidik Dharma

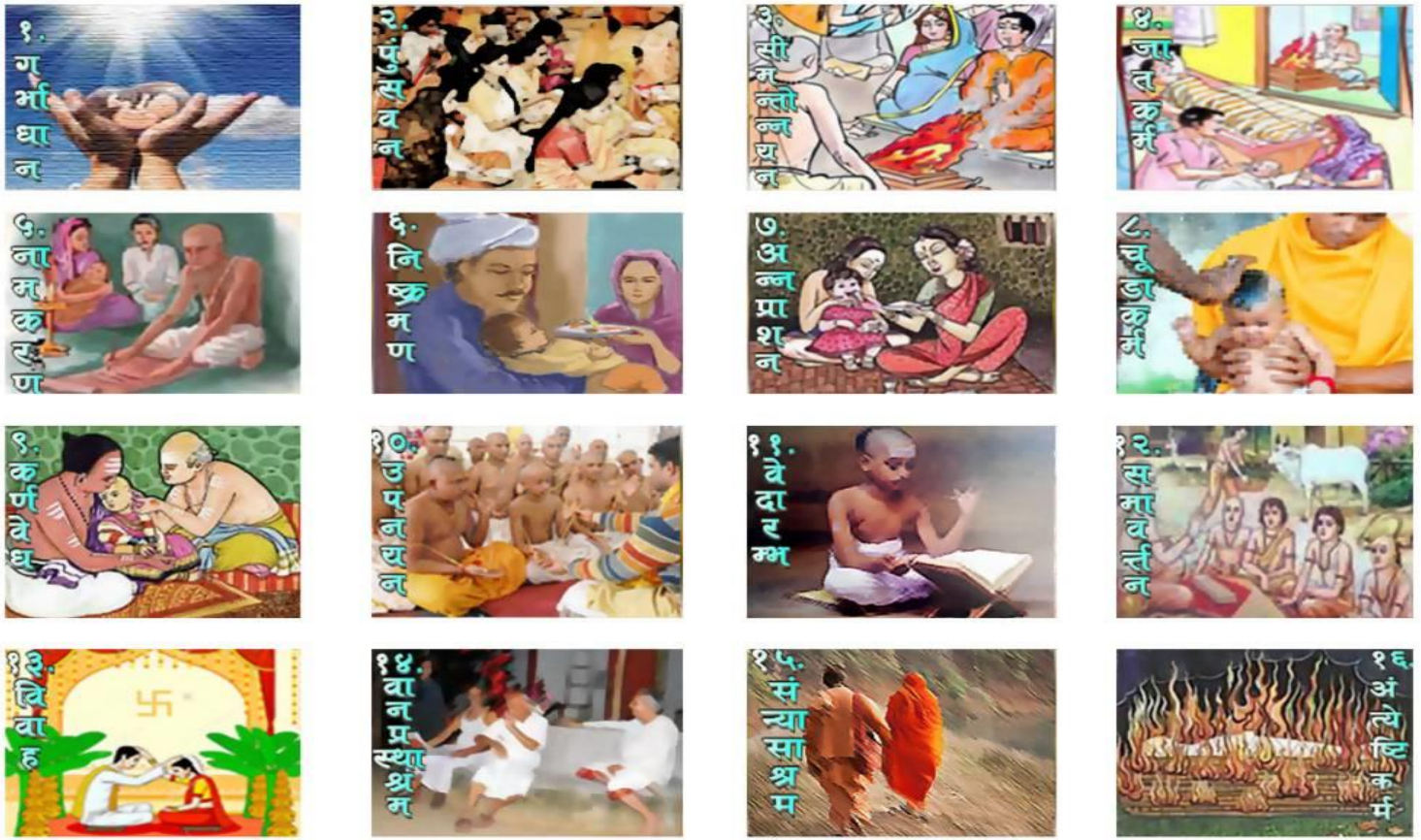

16 Sanskar

सृजन से विसर्जन तक षोडश संस्कार

- सृजन
  - गर्भाधान
  - पुंसवन
  - सीमन्तोन्नयन
  - जातकर्म
- संवर्धन
  - नामकरण
  - निष्क्रमण
  - अन्नप्राशन
  - मुण्डन
  - कर्णवेध
  - विद्यारम्भ
- समुत्कर्ष
  - उपनयन
  - वेदारम्भ
  - केशान्त
  - समावर्तन
  - विवाह
- समायोजन
  - अन्त्येष्टि

॥ गर्भाधानसंस्कार ॥
www.jagrantoday.com
॥ गर्भस्याऽऽधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं
यस्मिन्येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्

गर्भाधान

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भार्या तथैव च।
यस्मिन्नैव कुले नित्यं कल्याणं यत्र वै ध्रुवम्।।

यदि हि स्त्री न रोचते पुमांस न प्रमोदयेत।
अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्तते।।

स्वरूप -

गर्भाधान काल-याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार मूल और मघा नक्षत्रों को छोड़कर, मासिक प्रवाह की चौथी से सोलहंवी रात्रि।

सम अंकों वाली रात्रि पुत्र प्राप्ति हेतु तथा विषम अंकों वाली पुत्री प्राप्ति हेतु उपयुक्त है।

उत्तम भावना व सात्विक विचारों के साथ गर्भाधान निर्दिष्ट।

उद्देश्य/महत्व

गर्भाधारण के पूर्व शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्ति।

स्वस्थ रज वीर्य के संयोग से स्वस्थ शिशु की प्राप्ति।

पुंसवन

शोकं रक्तिविमोक्षं च साहसं कुक्कुटासनम्।
व्यावायंच दिवास्वापं रात्रौ जागरणं त्यजेत्।।
अतिरूक्षंतु नाश्नीयात् अत्यत्यम्लम् अतिभोजनम्।
अत्युष्णम् अतिशीतं च गुर्वाहार विवर्जयेत्।।
गर्भ रक्षा सदा कार्या नित्यं शौच निषेवणात्।
प्रशस्त मन्त्र लिखनाच्छस्त साल्यानुलेपनात्।।

संस्कार विधि -
गर्भाधान के पश्चात् दूसरे या तीसरे माह में पति पत्नी और कुटुम्ब के द्वारा सामान्य देव पूजन।

उद्देश्य/ महत्व -
परिवार तथा समाज को गर्भ-धारण की सहज सूचना प्राप्त।
गर्भवती की दिनचर्या, सुरक्षा, चिकित्सा तथा भोजन सभी का ध्यानाकर्षण।
पौरूषगुण सम्पन्न सन्तति की इच्छा जागरण से भावी माता को
दायित्व, गर्व, और आनन्द की अनुभूति।
पौरूषसम्पन्नसन्तति हेतु माता द्वारा उत्तम श्रवण, पाठन, लेखनादि
का आरम्भ।

सीमन्तोन्नयन

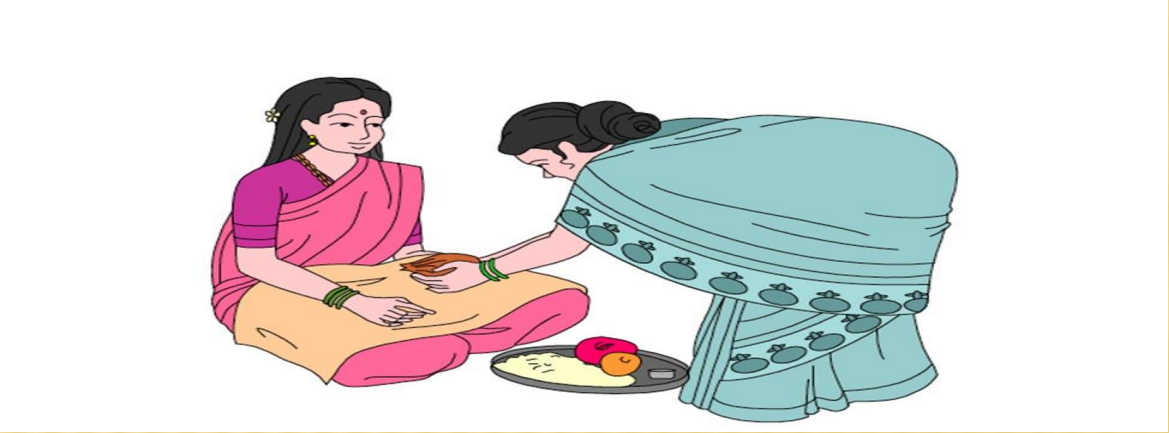

सीमन्तोन्नयन

प्रव्यक्त गर्भा पति रब्धियानं मृतस्य वाहंक्षुर कर्म संगम्।
क्षौरंतथष्नुगमनं नखकृन्तनंच युद्धादिवास्तु करणन्तु अतिदूरयानम् ।।

हृदये पितरौ ज्ञाता पूर्ण दायित्वं उत्तमम्
जन्मनः सन्तते कुर्यात् व्यवस्था स्वागताय च।।

विधिक्रम
चौथे माह में, सामान्य देव-पूजन पूर्वक पति के द्वारा पत्नी के केशों का संस्कार। ज्येष्ठ स्त्रियों द्वारा आशीर्वाद तथा सुरक्षा निर्देशों का कथन। गर्भिणी द्वारा रात्रि पर्यन्त मौनव्रत धारण।

उद्देश्य/ महत्व -
चौथा/पाँचवा माह शिशु के बौद्धिक व मानसिक विकास का काल है जिसमें माता की इच्छाओं की पूर्ति से होने वाला सकारात्मक प्रभाव विशेष योगदान करता है।
इस समय गर्भिणी दौहृदा कहलाती है तथा समाज उसकी नवीन इच्छाओं की पूर्ति अपना कर्तव्य समझता है।
पति के द्वारा केश सज्जा आत्मीय व स्नेह व्यवहार का सम्बल प्रदान करता है।
प्रसव की सम्भावित पीडा को उपेक्षित कर गर्भिणी में आशा व आनन्द का संचार होता है।

जातकर्म

कन्या सुपुत्रयोस्तुल्यं वात्सल्यं च भवेत्सदा।
तुल्यानन्दं विजानीयाद् द्वयोर्मनसि प्राप्तघोः।।
सुख शान्तेव्र्यवस्था च सुविधा याद्व्ययरपि।
समुत्कर्ष विकासाभ्यां ध्यानं यत्नं समं भवेत्।।

विधिक्रम

जन्म के समय या जन्म से छठवें/दसवें दिन अस्थायी सूतिका भवन से नीम युक्त जल द्वारा स्नानपूर्वक तथा औषधसम्पन्न यज्ञ धूम द्वारा शिशु व माता की शुद्धि तथा समाज व कुटुम्ब द्वारा शिशु का दर्शन व उत्सव।
शिशु जन्म के सटीक समय व नक्षत्रानुसार पत्रिका निर्माण तदनुसार केवल माता-पिता द्वारा ज्ञात गुप्त नामकरण विधि। जन्मस्थान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन।

उद्देश्य/ महत्व

शुद्धता के पश्चात् घर की दिनचर्या सामान्य होना।
समाज को शिशु जन्म की सूचना सहज रूप से ज्ञात होना।
शिशु के निश्चित जन्मसमयानुसार ज्योतिषीय गणनाएँ सम्भव ।
सामाजिक नामकरण हेतु आधार प्राप्त।
जड़ जन्मस्थान के प्रति कृतज्ञताज्ञापन भारतीयसंस्कृति का पालन।

नामकरण

नाम धेयं ततोयश्चापि महापुरुष कर्मणाम्।
विशदानां प्रेरकंच भवेत् तत्वगुण बोधकम्।।

विधिक्रम

जन्म से सवा महीने के अन्तराल में किया जाने वाला संस्कार।

सामान्य देवपूजन पूर्वक ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर उत्तम सार्थक नामकरण।

उद्देश्य/ महत्व

निर्धारित समय में सार्थक नामकरण से अर्थहीन नामों के सम्बोधन से शिशु का रक्षण।

सामूहिक रूप से बालक के नाम का संज्ञान।

निष्क्रमण

चन्द्रार्कयोदिगीशानां दिशां च वरुणस्य च।
निक्षेपार्थ मिदं दद्धि ते त्वां रक्षन्तु सर्वदा।।

प्रमत्तं वा प्रसुप्तं वा दिवारात्रमथापिवा।
रक्षन्तु सततं ते त्वां देवाः शक्रपुरोगमा।।

विधिक्रम

जन्म के बारहवे दिन से लेकर चतुर्थ मास तक परिस्थिति अनुसार बालक को सूर्यदर्शन कराना | गृह प्रत्यागमन मामा की गोद में होता है |

उद्देश्य/महत्व

प्रधान ऊर्जा के स्रोत सूर्य की जीवन में आवश्यकता का प्रतिपादन|

प्रकृति के प्रीटी कृतज्ञ भाव की अभिव्यक्ति पूर्वक संरक्षण की कामना|

मातृपक्ष से शिशु के आत्मीय संबंधों का प्रतीक

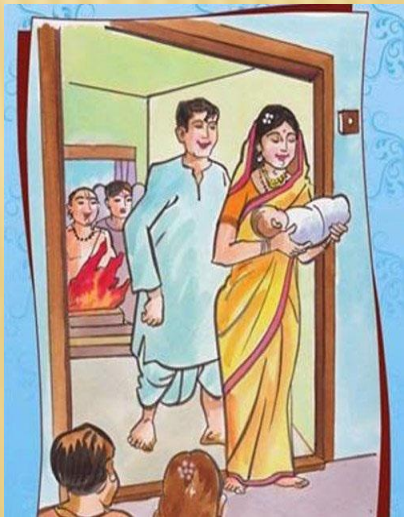

अन्नप्राशन

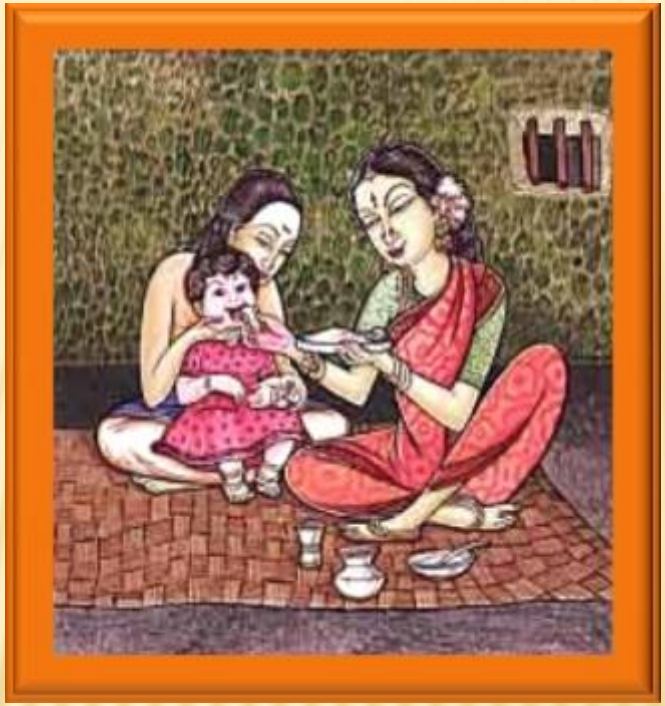

अन्नप्राशन

अन्नस्य सूक्ष्म भागेन विकासो भवेत्।
अतो न्यायादर्जन कुर्याच्चामलं सत्क्रियादिभिः।।

मत्वान ब्रह्म हि त्येतत प्रेम श्रद्धावरेण च।
ह्रासीच्छिष्ट विना कुर्यादुपयोग विधानतः।।

विधिक्रम

छठे से सातवें माह में सामान्य देव, पूजन पूर्वक उत्तम भाव और शुद्धता से माता द्वारा बनाया हुआ चावल या खीर इत्यादि सुपाच्य पदार्थ शिशु को माता के हाथ से दिया जाए। तत्पपश्चात शिशु को जीवन पर्यन्त सुपाच्य अन्न, धर्मयुक्त अर्थ से उपार्जित अन्न तथा शुद्धता एवं सात्विक भाव से पकाया गया अन्न प्राप्त हो ऐसी कामना की जाती है।

उद्देश्य/ महत्व

उचित समय पर अन्नप्राशन होने से माता व शिशु दोनो के स्वास्थ्य की रक्षा।
अन्न का महत्व प्रतिपादन। अन्न की प्राप्ति, पकाना, परोसना, खिलाना और पचाना जैसे वैज्ञानिक विषयों पर परिवार व माता का ध्यानाकर्षण।

मुण्डन/चूडाकर्म

कल्याणाय च लोकानां प्रयोगो बुद्धिज्ञानयोः।
साफल्यं मानवीयस्य जीवनस्येह निश्चितं।।

विधिक्रम
यह प्रायः जन्म से तीसरे वर्ष में जन्म से प्राप्त बालों को हटाने का संस्कार है।

उद्देश्य/ महत्व
नए व स्वथ बालों के विकास हेतु यह आवश्यक है।
अन्तरिक्ष की उर्जा के संग्राहक व वाहक के रूप में मुण्डन के
पश्चात् त्यक्त शिखा का महत्व भी शास्त्रों में उक्त है।

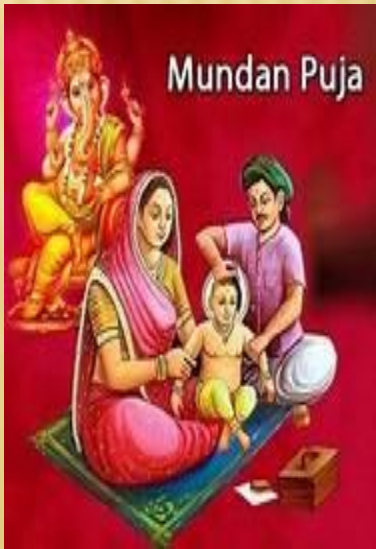

कर्णवेध

कर्णवेधे बालो न ग्रहैरभिभूयते।
भूष्यते अस्य मुखं तस्मात्कार्यस्तत्कर्णयोर्व्यध : ।।

उद्देश्य/महत्व

आयुर्वेद के अनुसार कर्णवेध पुरूष में नपुंसकता और स्त्री में बंध्यत्व को रोकता है।

मूत्र विसर्जन तन्त्र व प्रजनन अवयवों के विकास और संचालन में यह सहायक है।

सुश्रुत के अनुसार अण्डकोष वृद्धि रोकने में भी यह सहायक है।

कर्णाभूषण धारण करने से स्नायुमण्डल पर सकारात्मक प्रभाव भारतीय चिकित्सा शास्त्रियों ने प्रतिपादित किया है।

विद्यारम्भ

कीर्तिप्रदे अखिलमनोरथदे महार्हे विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।।
ब्रह्मा जगत सृजति पालयतिन्दिरेशः शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावै।।
न स्यात् कृपा यदि तव प्रकटप्रभावै न स्युः कथंचिदपि ते निज कार्य दक्षाः।।

विधिक्रम
तीन वर्ष के पश्चात किसी शुभ दिन में देव-पूजन पूर्वक सन्तान के हाथों से शुभवचनों का लेखन व वाचन करवाना।

उद्देश्य/ महत्व
ज्ञान का जीवन में महत्व प्रतिपादन।
संस्कारपूर्वक संतान का ज्ञान-सागर में प्रवेश।
माता-पिता को औपचारिक शिक्षण के दायित्व का बोध होना।

उपनयन तथा वेदारम्भ

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे विभर्ति तंजात द्रष्टुमभि संयति देवाः।।
वेदस्याध्ययनं सर्व धर्मशास्त्रास्य चैवहि।
अजानतो अर्थतद्व्यर्थं तुषाणांकण्डनं यथा।।

विधिक्रम

प्रायः आठ वर्ष का होने पर उपनयन अर्थात गुरू के समीप सन्तान को ले जाया जाता है। इस हेतु वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ मुण्डन, स्नान, कौपीन मेखला, यज्ञोपवीत तथा दण्डधारण किया जाता है। माता तथा कुटुम्बजनो से भिक्षा प्राप्त कर बालक गुरू कुल में प्रविष्ट होता है। यह ब्रह्मचार्यश्रम में प्रवेश का प्रतीक है। इसके पश्चात् वेदारम्भ संस्कार गुरूकुल में होता है। (वर्तमान में आधुनिक विद्यालयों में प्रवेश के पश्चात् घर में भी वेद अथवा शास्त्रज्ञान दिया जा सकता है।)

उद्देश्य

सन्तान के मन मस्तिष्क पर ब्रह्मचर्य आश्रम के कर्तव्यों का चित्र स्पष्ट होना।

जीवन अनुशासित और संयमित होता है।

प्रज्ञा का विकास तथा दृष्टिकोण विराट् होता है।

कौपीन व मेखला कटिप्रदेश के स्नायुओं को सबल बनाती है।

यज्ञोपवीत/जनेउ ब्रह्मचर्य के प्रतीक के साथ शुद्धता व स्वच्छता हेतु स्मरण कराता है।

वेदारम्भ संस्कार के माध्यम से वर्तमान में यदि घरों में वेदों या अपने कुल से सम्बन्धित शास्त्रों का प्रवेश होता है तो सहज रूप से परिवारजन भी उनके अध्ययन के लिए प्रेरित होते हैं।

समावर्तन

नृत्य गीत वादित्राणि न कुर्यात् न च गच्छेत्।
क्षेमे रात्रौ न ग्रामान्तर गमनम्, न धावेत न कूपेक्षणम्।।

नग्नतो न स्नायात्, न सन्धिसर्पणम्, न विषमभूमिलंघनम्।
अश्लीलं नोपवदेत्, अजातलोम्नी प्रमत्ताम् पुरुषाकृताम्,
षण्ढाम् गर्भिणीम् नोपहसेत्।।

उद्देश्य/महत्व
विद्याध्ययन पूर्ण होने पर उत्साह और गर्व की अनुभूति।
माता-पिता और परिवार हेतु आनन्द और गौरव का क्षण।
गुरू के महत्व का प्रतिपादन।
गृहस्थाश्रम में प्रवेशार्थ दायित्व का बोध होना।
प्राप्त ज्ञान को व्यवहार में लाने हेतु मार्ग प्राप्ति।
धनार्जन हेतु प्रवृत्ति।

विवाह

अधीत्य वेदान् कृतसर्वकृत्यः
सन्तानमुत्पाद्य सुखानि भुक्त्वा।
समाहितः प्रचरेद् दुश्चरंयो
गार्हस्थ्यधर्म मुनिधर्मजुष्टम्।।

शास्त्रों में विवाह के आठ प्रकार बताए हैं:-

पैशाच - सुप्त, मत्त, अचेतन अवस्था में किया गया विवाह कर्म।
राक्षस - कन्या का अपहरण कर किया जाने वाला विवाह।
गान्धर्व - अभिभावकों के बिना केवल स्त्री-पुरूष की परस्पर सहमति से किया गया विवाह।
आसुर - धन देकर कन्या प्राप्त करना।
प्राजापत्य - कन्या के पिता द्वारा अनुबन्धों के साथ विवाह करना।
आर्ष - वर से गौदान लेकर कन्या देना।
दैव - यज्ञ के पश्चात् पुरोहित को कन्या का दान कर देना।
ब्राह्म - पिता द्वारा उचित वर का अन्वेषण कर पुरूषार्थों की सिद्धि हेतु विधि-विधान से किया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ विवाह।

सप्तपदी पूर्वक विवाह की विस्तृत विधि सर्वविदित है इसका उद्देश्य/महत्व यह है कि:-
नवीन सम्बन्ध को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है।
वधू का वर के घर में तथा वर का वधू के घर में सम्मान के साथ प्रवेश होता है।
वैदिक मन्त्रों में परिजनों के मध्य सम्पन्न संस्कार वर-वधू के सम्बन्ध की पवित्रता और दृढता का द्योतक है।
नियमानुसार विवाह होने से आनुवांशिक दोषों को रोका जा सकता है।
शास्त्र विधि से संस्कार करने से सामाजिक आडम्बरों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अन्त्येष्टि

अन्त्येष्टि

रोदनपेक्ष्या कुर्यात सुव्यवस्थां मृतात्मनः।
समाश्रिता समर्थानां पुत्रानां समाचरेत्।।
कल्याणमय कर्माभि मृतात्मनः सुशान्तये।
तच्छेषोत्तरदायित्वं विदधेच्च शुभेच्छया।।

विधिक्रम
त्रिविध कर्म
मृत्यु काल के कर्म
दाह संस्कार के कर्म
श्राद्धकर्म
उद्देश्य/महत्व
शरीर का सम्मानपूर्वक पंचतत्त्व में विलीन होना।
गीता इत्यादि ग्रन्थों के पाठ से परिजनों के शोक का निवारण।
त्रयोदशाह तक विविध कर्मों के कारण कुटुम्ब का शोकाकुल परिवार के साथ रहना।
कर्म समाप्ति के पश्चात् पुनः दिनचर्या सामान्य होना।
श्राद्ध तर्पण इत्यादि क्रियाओं से नई पीढ़ी को अपने पूर्वजों से जोड़ कर रखना।

उपसंहार

यही मनुष्य के जीवन की पूरी यात्रा है जिसे भारतीय मनीषियों ने शृंखलाबद्ध किया है जिससे कि कोई भी मानव लक्ष्योन्मुख होकर अपनी सन्तति का सही समय पर सही संस्कार करते हुए उसका मार्ग निर्दिष्ट करे। भौतिक चरमोत्कर्ष ने इन संस्कारों को विस्मृत किया है किन्तु इनमें निहित वैज्ञानिकता , हिन्दू धर्म की व्यापकता और गहनता सदैव भारतीय ज्ञान सम्पदा पर आत्मगौरव तथा अभिमान रखने वाले और वीर, यशस्वी तथा योग्य उत्तराधिकारी चाहने वाले मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करती रहेगी।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते |
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ||
ॐ शान्तिः ॥

प्रस्तुतकर्त्री
डॉ.पूजा मनमोहनोपाध्याया

संदर्भ एवं सहायक ग्रन्थ :-

१.मनुस्मृति
२.याज्ञवल्क्यस्मृति
३.आपस्तम्बगृह्यसूत्र
४.आश्वलायनगृहसूत्र
५.पारस्कर गृह्यसूत्र
६.भारतीय संस्कृति - डॉ. दीपक कुमार
७.सृजन से विसर्जन तक - अनिलमाधव दवे
८.संस्कारप्रकाश –गीताप्रेस ,गोरखपुर

धन्यवाद